
अशुभ संसार
के लिये
एक शुभ सन्देश

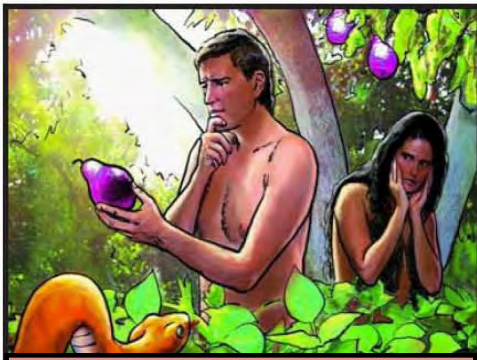




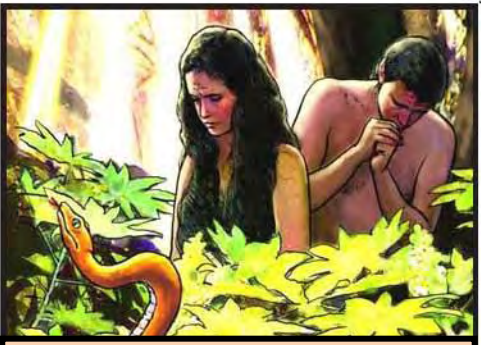
आरम्भ में यह संसार जिसकी रचना परमेश्वर ने की थी सबसे बढ़िया था। मनुष्य को परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप में रचा था। उस समय कोई पीड़ा, कष्ट और मृत्यु न थी। परमेश्वर ने मनुष्य को कहा कि वह अदन की वाटिका के वह सभी फल खा सकेगा परन्तु एक फल को छोड़कर "भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल।" उत्पत्ति 2:17



शैतान, जोकि दुष्ट है और पतित दूत है, वह एक सुन्दर सर्प के रूप में स्त्री के पास आया और उसे मना किए हुए फल को खाने के लिए बहकाने लगा।

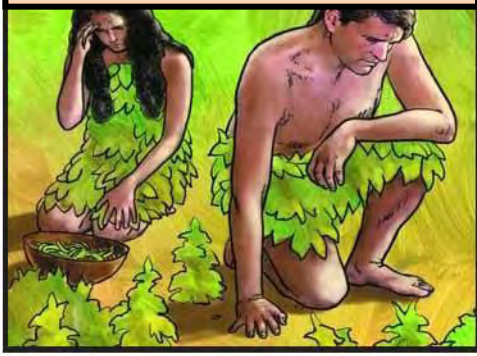


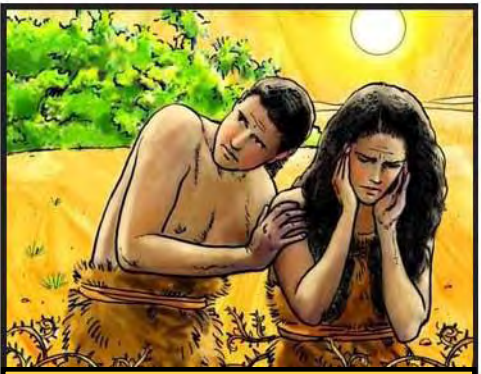
आदम की पत्नी, हव्वा ने, उस फल को खाया और अपने पति को भी दिया। जब मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया तो उनके साथ और हमारे साथ एक दुखद घटना हो गई।



परमेश्वर ने मनुष्य को सावधान किया था कि यदि वह आज्ञा का उल्लंघन करेगा तो मर जाएगा। आदम ने वह फल खाया और सार मानव जाति पर मृत्यु के भयंकर श्राप को लाया और यहाँ तक कि प्राणिजगत पर भी।

आदम और हव्वा परमेश्वर की संगति से अलग हो गए जिसने उनको रचा था और उनसे प्रेम किया था। लोग अब आपस में एक दूसरे के साथ टकराव में और लज्जा में और मानवीय पापी हृदय के दुख में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।





पाप के कारण से, आदम और हव्वा को उस सुन्दर वाटिका से बाहर निकाल दिया जो परमेश्वर ने उनको दी थी। परन्तु परमेश्वर ने अभी भी उनसे प्रेम किया और उन्हें एक निर्दोष पशु के चर्म के वस्त्र बनाकर पहनाए।



आदम और हव्वा ने इससे पहले कभी भी मृत्यु को नहीं देखा था। परमेश्वर उन्हें दर्शा रहे थे कि उनके पापों के अपराध के लिए एक निर्दोष मेमने को बलि के रूप में मरना होगा।



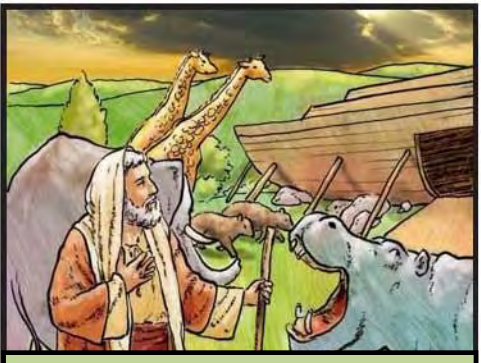
सम्पूर्ण पराने नियम में, लोग निर्दोष पशु की बलि से विश्वास के द्वारा ही परमेश्वर के पास आ सकते थे, यह बलि एक महान बलि की ओर संकेत करती थी जो एक दिन पाप को मिटाने के लिए होने वाली थी।

आदम और हव्वा के लिए सबसे बुड़ा दुख तब आया जब उनके बड़े पुत्र कैन ने उनके छोटे पुत्र हाबिल का क्रोध और डाह के कारण हत्या की कर दी। पाप एक भयंकर चीज है और इसने सम्पूर्ण मानव जाति पर पर हिंसा के कुरूप दाग की छाप छोड़ दी है!





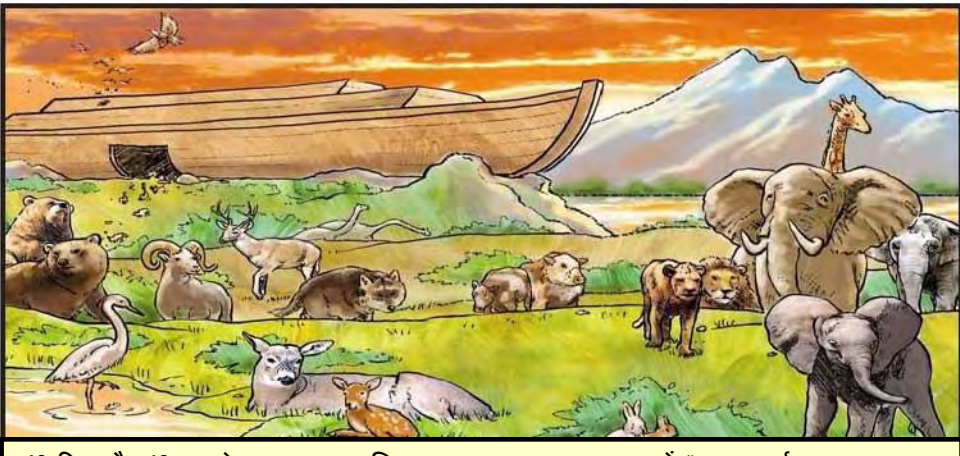
मनुष्य पापी और अधिक पापी होता चला गया, और देखते ही देखते संसार में हिंसा भर गई। नूह के दवारा परमेश्वर ने लोगों को चिताया कि संसार पर दण्ड आने वाला है, परन्तु लोगों ने नूह की हँसी उड़ाई और परमेश्वर के सन्देश का तिरस्कार किया। दण्ड आ रहा था!



अन्त में, एक बड़ी नाव जो परमेश्वर ने नूह को बनाने के लिए कहा था का निर्माण पूरा हो गया और उसने और उसके परिवार और उनके साथ ही साथ हज़ारों की संख्या में पशुओं ने उसमें आकर शरण ली।



बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने धरती पर एक भयंकर जलप्रलय को भेजा। केवल नूह और उसका परिवार ने "परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाया"क्योंकि उन्होंने उस सन्देश पर विश्वास किया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था।



40 दिन और 40 रात के बाद, जल का गिरना रुक गया। वह नाव अन्त में "अरारात पर्वत पर आकर टिक गई" जलप्रलय के आरम्भ होने के एक वर्ष बाद।



उस नाव से बाहर निकलने के बाद नूह ने सबसे पहला काम परमेश्वर के लिए एक वेदी का निर्माण किया और अपने और अपने परिवार के पापों के प्रायश्चित के लिए एक निर्दोष पशु की बलि दी।

इसके कई वर्षों के बाद परमेश्वर ने एक अब्राहम नाम के व्यक्ति को एक जाति को उत्पन्न करने के लिए चुना जिसके द्वारा परमेश्वर के वचन और उनकी व्यवस्था को दिया जाना था।

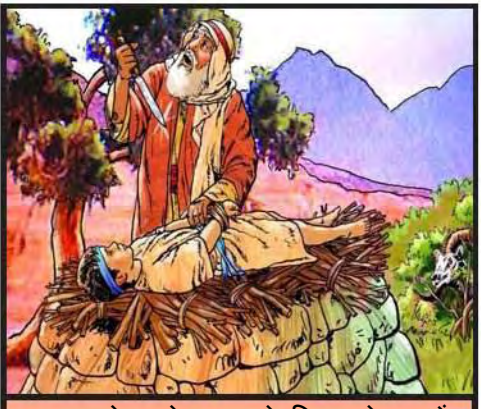
इस समय के दौरान, जो लोग परमेश्वर को जानते थे उन्होंने अपने पापों के प्रायष्चित के लिए परमेश्वर को निर्दोष पशु का बलिदान चढ़ाना जारी रखा। परन्तु पशु का लहू मनुष्य के पाप के अपराध को मिटा नहीं सका, और एक ऐसा दिन आने वाला था जब परमेश्वर को एक महान बलिदान को प्रदान करना था। एक सिद्ध और पापरहित बलिदान को सारी मानव जाति के पापों के लिए मरने के लिए संसार में आना था।



एक दिन, अब्राहम जो इब्री लोगों का जनक हुआ, परमेश्वर ने उसे एक पर्वत पर उपासना करने के लिए और पाप के लिए बलिदान चढ़ाने को कहा।



परमेश्वर के द्वारा अब्राहम की बड़ी जटिल परीक्षा हुई जब उसे कहा कि वह अपने ही पुत्र को वेदी पर होमबलि के रूप में बलि करे।



परन्तु परमेश्वर ने इसहाक के विकल्प के रूप में झाड़ियों में फंसे हुए एक मेढ़े को दिया। यह एक पूर्वदृश्य था कि परमेश्वर हमारे स्थान पर बलि के रूप में अपने निज पुत्र को देगा।



परमेश्वर अब्राहम को दिखा रहे थे कि भविष्य में एक दिन परमेश्वर का निर्दोष मेमना मरेगा और प्रत्येक व्यक्ति के पापों को धो डालेगा उन लोगों के लिए जो उसमें विश्वास करेंगे।

सैकड़ों वर्षों के बाद, मिस्र देश में, परमेश्वर ने अपने लोगों को अविश्वासियों पर आने वाले दण्ड से बचने के लिए अपने चैखटों पर पसाह के मेमने के लहू को लगाने के लिए कहा। निर्गमन 12:1-13

उस समय, परमेश्वर ने मूसा को इब्री लोगों के लिए अपनी व्यवस्था दी ताकि सारे मनुष्य गलत और सही को पहचान लें और उनको एक मुक्तिदाता की जरूरत को दर्शाया। प्रत्येक मनुष्य अपने जनम से ही पापी है और अपनी मर्जी से और कोई भी मनुष्य परमेश्वर की व्यवस्था, 10 आज्ञाओं को पूरा नहीं कर सकता।

10 आज्ञाएः

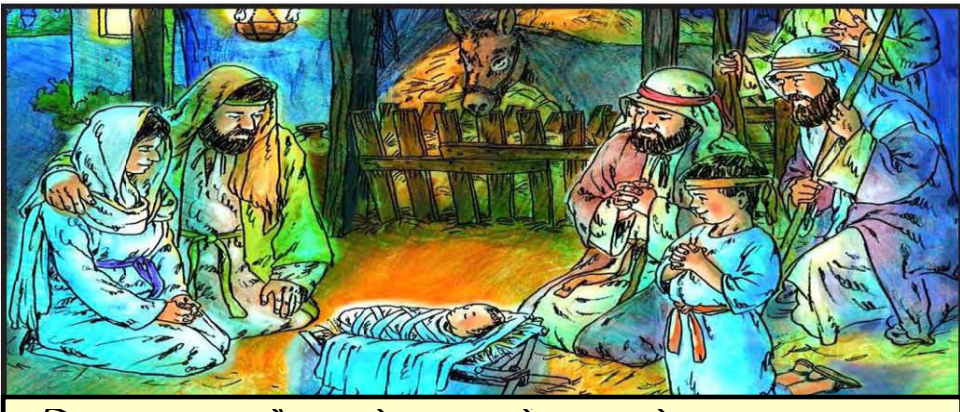
1. तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।
2. तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना।
3. तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।
4. तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।
5. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
6. तू खून न करना।
7. तू व्यभिचार न करना।
8. तू चोरी न करना।
9. तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना।
10. तू लालच न करना।

सैकड़ों वर्षों से निर्दोष मेमनों की बलि जारी थी जिसने पाप के भयंकर परिणाम अर्थात मृत्यु को दर्शाया।

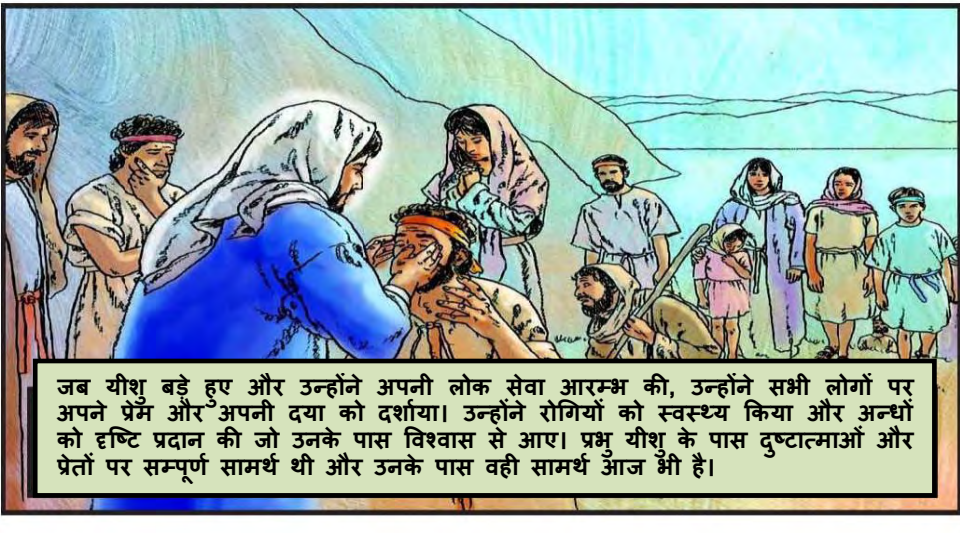
परन्तु मात्र पशुओं की बलि मनुष्य के पाप के दण्ड को हटा न सकी...इसके लिए बहुत बड़ा बलिदान होगा जिसे परमेश्वर का मेमना कहा जाएगा।

नामक नबी ने नबूवत की थी कि किसी दिन एक कुँवारी गर्भवती होगी और मुक्तिदाता को जनम देगी जो मनुष्य के पापों के लिए बलिदान होगा। (यशायाह 7:14)

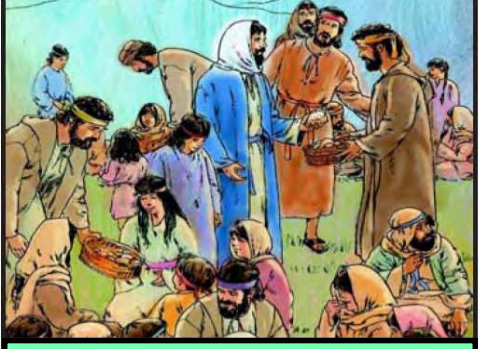
अन्त मे, सैकड़ो वर्षों के बाद, एक स्वर्गदूत आया और इस शुभ समाचार की घोषणा मरियम नाम की कुँवारी कन्या पर की जो इस्राएल देश के नासरत नगर में रहती थी। परमेश्वर के पुत्र का जनम एक आश्चर्यकर्म होगा। उसका कोई मानवीय पिता नहीं होगा।



मुक्तिदाता का जनम बैतलहम के पशुशाला मे हुआ। परमेश्वर मनुष्य बना। उनका नाम यीशु था, और वह परमेश्वर का मैमना कहलाएगा। यीशु बहुत से लोगों को दण्ड और उनके पापों की सामर्थ से छुड़ाएँगे।



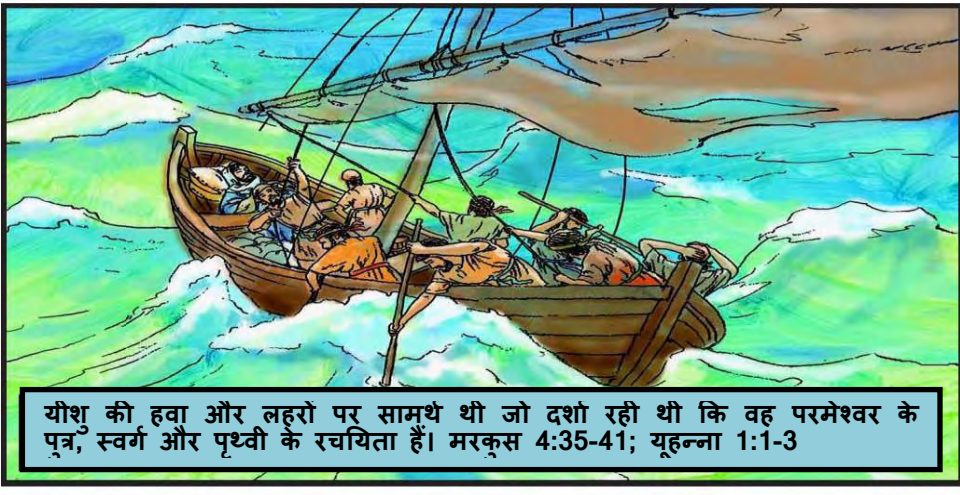
जब यीशु बड़े हुए और उन्होंने अपनी लोक सेवा आरम्भ की, उन्होंने सभी लोगों पर अपने प्रेम और अपनी दया को दर्शाया। उन्होंने रोगियों को स्वस्थ्य किया और अन्धों को दृष्टि प्रदान की जो उनके पास विश्वास से आए। प्रभु यीशु के पास दुष्टात्माओं और प्रेतों पर सम्पूर्ण सामर्थ थी और उनके पास वही सामर्थ आज भी है।



यीशु ने बहुत से आश्चर्यकर्म किए। एक बार उन्होंने एक छोटे बालक के भोजन पाँच रोटी और दो छोटी मछलियों से एक विशाल भीड़ को भोजन खिलाकर अचम्भे में डाल दिया।



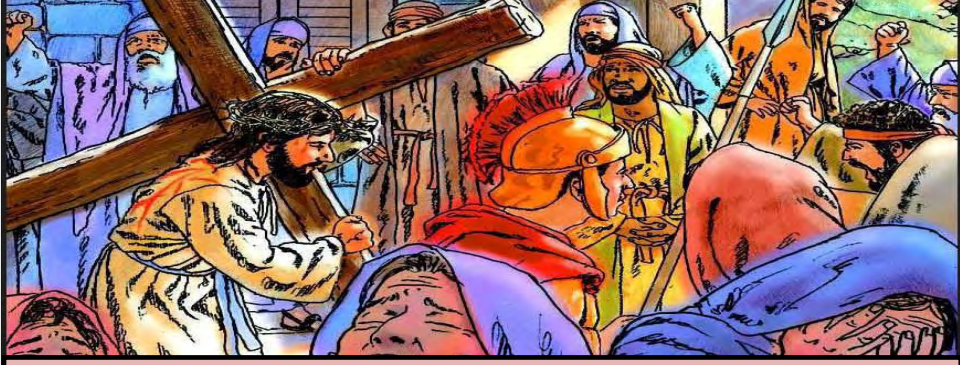
यीशु ने यहाँ तक कि एक मृतक को भी जीवित कर दिया जब उन्होंने कहा - "लाज़र बाहर आ जा।"
यीशु ने घोषणा की - "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।" यूहन्ना 11:25



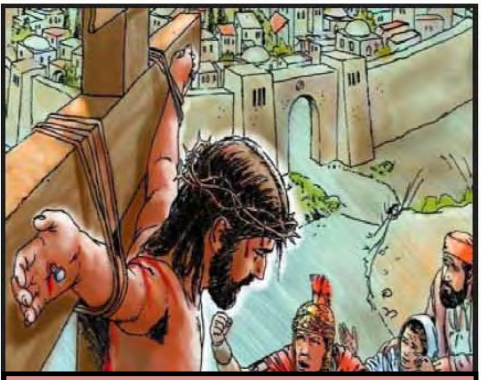
यीशु की हवा और लहरों पर सामर्थ थी जो दर्शा रही थी कि वह परमेश्वर के पुत्र, स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता हैं। मरकुस 4:35-41; यूहन्ना 1:1-3



जिस तरह से यीशु ने समुन्द्र की उठती लहरों को शान्त किया, वह परेशान हृदय जो जीवन की कष्टों और परीक्षाओं से भयभीत है में शान्ति ला सकते हैं।



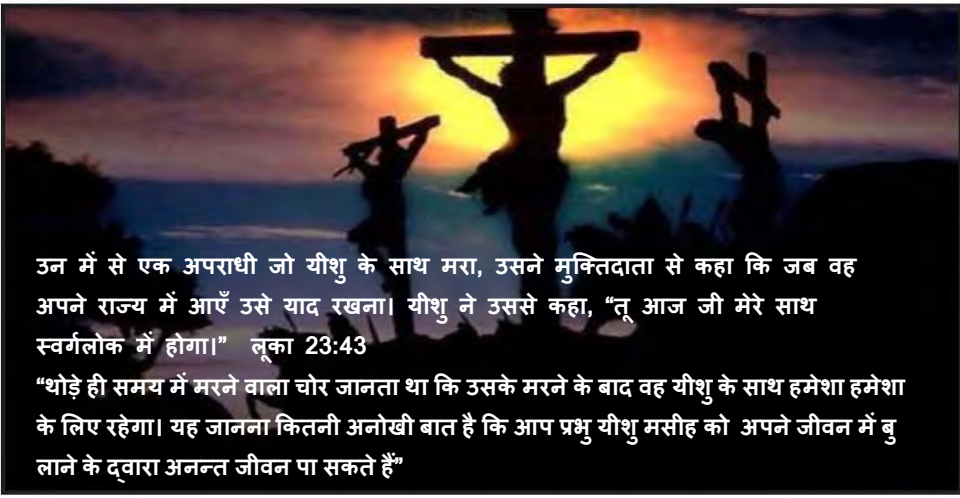
उनके द्वारा इतनी भलाई करने के बावजूद भी, धार्मिक अगुओं ने प्रभु यीशु से घृणा की। उन्होंने यीशु को पकड़ लिया और उन पर झूठे आरोप लगाए। क्रूर व्यक्तियों ने उनके मुँह पर थूका, उन्हें मारा और उनके सिर पर काँटों का मुकुट रख दिया और उन्हें क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले गए।



यीशु को एक ओछे अपराधी की तरह लकड़ी के क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया। परमेश्वर के पुत्र ने कष्ट सहा और हमारे पापों के दण्ड का भुगतान करने के लिए मर गया।



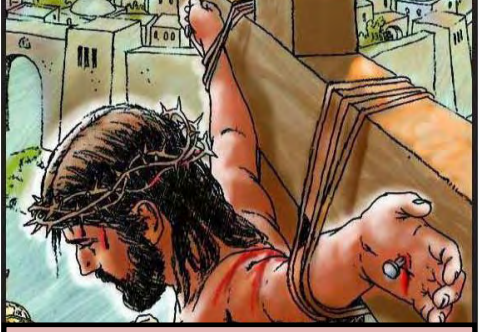
जिस तरह से, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी, एक सिद्ध और निष्पाप परमेश्वर का मेमना हमारे स्थान पर बलिदान के रूप में मरा।



उन में से एक अपराधी जो यीशु के साथ मरा, उसने मुक्तिदाता से कहा कि जब वह अपने राज्य में आएँ उसे याद रखना। यीशु ने उससे कहा, "तू आज जी मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" लूका 23:43

"थोड़े ही समय में मरने वाला चोर जानता था कि उसके मरने के बाद वह यीशु के साथ हमेशा हमेशा के लिए रहेगा। यह जानना कितनी अनोखी बात है कि आप प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में बु लाने के द्वारा अनन्त जीवन पा सकते हैं"

"क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" रोमियों 10:13



अपने प्राण त्यागने से पहले, यीशु ने कहा - "पिता इन्हें क्षमा करो।" यहाँ तक कि रोमी सिपाही जानता था कि यह व्यक्ति जिसने अपने वैरियों के लिए प्रार्थना की है परमेश्वर का पुत्र है।



हमारे पापों के लिए उनकी मृत्यु के बाद, यरूशलेम की चारदीवारी के बाहर एक बाग में बनी हुई नयी कब्र में रखा।



रोमी सिपाहियों को आदेश दिया गया कि कब्र को मोहर लगाएँ और उसकी रखवाली करें ताकि कोई भी यीशु मसीह के मृतक देह को चुरा कर न ले जा सके।

यहूदियों के पूसह और सूबत के दौरान यीशु तीन दिन और तीन रात कब्र में रहे।

प्रभु यीशु के शिष्यों के लिए यह समय कितना कठिन समय होगा जब वे भयभीत होकर छुपे हुए थे। अपने दुख और भय में वे इस बात को भूल गए जो प्रभु यीशु ने उन्हें अपनी मृत्यु, दफनाए जाने और जी उठने के विषय बताया था, "यूनुस तीन रात दिन जल जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।" मत्ती 12:40



सप्ताह के पहले दिन, यीशु मृतकों में से जी उठे! परमेश्वर के पुत्र पाप और मृत्यु पर विजयी हुए।

यीशु ने कहा - "इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे।" यूहन्ना 14:19



पुनरुत्थान की प्रातः कुछ विश्वासी स्त्रियों का समूह यीशु की देह पर मसाले मलने के लिए आया। उनको स्वर्गदूत ने बताया, "वह यहाँ नहीं है, वह जी उठा है।" मत्ती 28:1-6

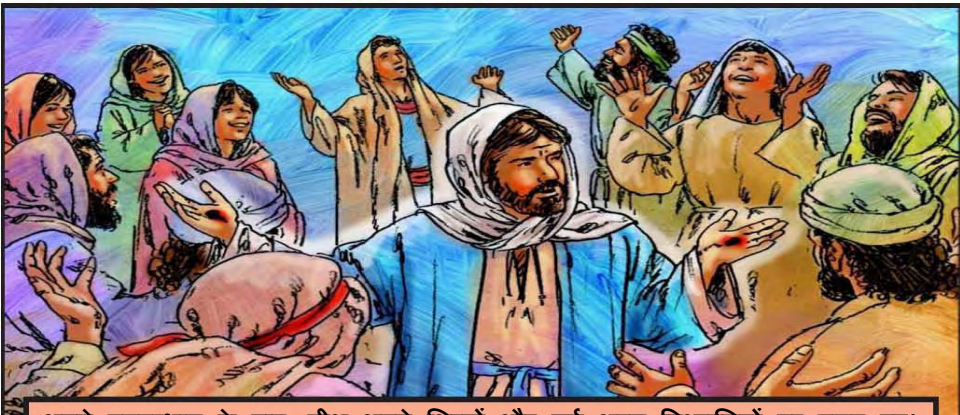
यीशु के दो शिष्य कब्र की ओर दौड़े और वे हैरान हुए कि कफन के वस्त्र वहीं पर थे परन्तु यीशु मृतकों में से जी उठे थे। यूहन्ना 20:1-8



हमारा यह ससार दुख और अन्धकार से इतना भरा हुआ है, प्रभु यीशु मसीह का पुनरुत्थान जो उन पर विश्वास करते हैं वह उनको महान आशा देते हैं। यीशु जीवित हैं और वह उन सब लोगों को अनन्त जीवन देने की प्रतिज्ञा करते हैं जो उन पर मुक्तिदाता के रूप में विश्वास करेंगे।

केवल प्रभु यीशु ही यह अनन्त जीवन दे सकते हैं, जैसा कि उन्होंने कहा -"मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" यूहन्ना 14:6

आप परमेश्वर के वरदान अनन्त जीवन को पा सकते हैं यदि आप अपने पापों और अविश्वास से मुड़ें और मुक्तिदाता के रूप में उन पर विश्वास करें।



अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु अपने शिष्यों और कई अन्य विश्वासियों पर प्रकट हुए। उन्होंने उनसे कुछ खाने के लिए मांगा यह दर्शाने के लिए कि उनके जी उठने के बाद भी उनके एक देह है और यह कि वह वास्तव में ही जीवित हैं। लूका 24:36-43



40 दिनों के बाद, यीशु स्वर्ग वापिस चले गए, परन्तु जाने से पहले, उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन वह अपने शिष्यों के लिए वापिस आएँगे। यीशु ने कहा - "मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।" यहन्ना 14:2-3





जीवित और महिमामयी परमेश्वर के पुत्र अब स्वर्ग में अपने पिता के दाहिने हाथ विराजमान हैं। वह हम सबके लिए जो उन पर मुक्तिदाता के रूप में विश्वास करते हैं मध्यस्थी और अभिवक्ता हैं। इब्रानियों 4:14-16; 7:25; 9:24

अशुभ समाचारः "पाप की मजदूरी मृत्यु है..."

शुभ समाचारः "...परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।" रोमियों 6:23

जिस घड़ी हम हमारी पापी दशा को जान जाते हैं और सच्चाई विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह हम सभी के पापों के लिए बलिदान के रूप में मरे, हमें मुफ्त में अनन्तकाल का जीवन दिया गया है और हमारे नाम "मेमने की पुस्तक में लिखे गए हैं।" प्रकाशितवाक्य 20:11-15

"क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" रोमियों 10:3

जब यीशु ने क्रूस पर अपने प्राण त्यागे तो उन्होंने सारे संसार के पापों को अपने ऊपर ले लिया। जब हम उन पर मुक्तिदाता के रूप में विश्वास करते हैं, वह हमें क्षमा करते हैं और वह हमें अपनी सिद्धता और धार्मिकता में ढक लेते हैं।

"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाए।" 2 कुरिन्थियों 5:21



"मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उस ने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है..." यशायाह 61:10

प्रश्न: क्या इस समय कोई ऐसी बात है जो आपको प्रार्थना करने और यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण करने में रोक रही है?

क्या इस समय कोई ऐसी बात है जो आपको यीशु पर विश्वास करने में रोक रही है?

"यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? " मरकुस 8:36

यदि आप विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ने आपके लिए मृत्यु को कहा और आप चाहते हैं कि वह आपको आपके पापों से बचाए, हम आपको नीचे लिखी प्रार्थना या इसके समरूप प्रार्थना अपने शब्दों में करने के लिए सुझाव देते हैं:

"प्रभु यीशु, मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किया है और मैं आपके साथ स्वर्ग में रहने के योग्य नहीं हूँ। परन्तु मैं यह विश्वास करता हूँ कि आप मेरे पापों का पूरा मूल्य चुकाने के लिए क्रूस पर मर गए।

मैं विश्वास से अपने अविश्वास और अपने पाप से मुड़ता हूँ और आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे बचाएँ। मैं आपको अपने जीवन में आने के लिए आमन्त्रित करता हूँ।

प्रभु यीशु मुझसे प्रेम करने के लिए और क्रूस पर मेरे लिए अपने प्राण देने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। परमेश्वर का वरदान अनन्त जीवन मुझे देने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं आपका वचन पढ़ने और आपके लिए जीवन व्यतीत करने के लिए आप अब मेरी सहायता करें।

यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ, आमीन।"

"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।"
यूहन्ना 1:12

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुह से अंगीकार किया जाता है।" रोमियों 10:9-10

हम आपको परमेश्वर का वचन बाइबल हर रोज पढ़ने के लिए और प्रार्थना करने के लिए उत्साहित करना चाहेंगे...और आप किसी ऐसी कलीसिया में जाएँ जो विश्वासयोग्यता से बाइबल के वचनों को सिखाते हों। पानी का बपतिस्मा किसी को भी नहीं बचाएगा, परन्तु यह प्रभु की आज्ञा है और यह दूसरों के लिए एक साक्षी है कि आपने मसीह में विश्वास किया है। यीशु अन्य विश्वासियों के साथ संगति और अपने मित्रों को बताएँ जो यीशु ने आपके लिए किया है...और उनके लिए किया है।

बाइबल घोषणा करती है कि आप जान सकते हैं कि यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा अनन्त जीवन आपके लिए है:

"प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" प्रेरितों के काम 16:31

"मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।" 1यूहन्ना 5:13

"जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" यूहन्ना 3:36

"मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" यूहन्ना 5:24

"सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दंड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।" रोमियों 8:1

"क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।" रोमियों 8:38-39